गुप्तजी की जीवन झाँकी

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी के व्यक्ति एवं कृतित्व पर पद्यमय अनुकृति

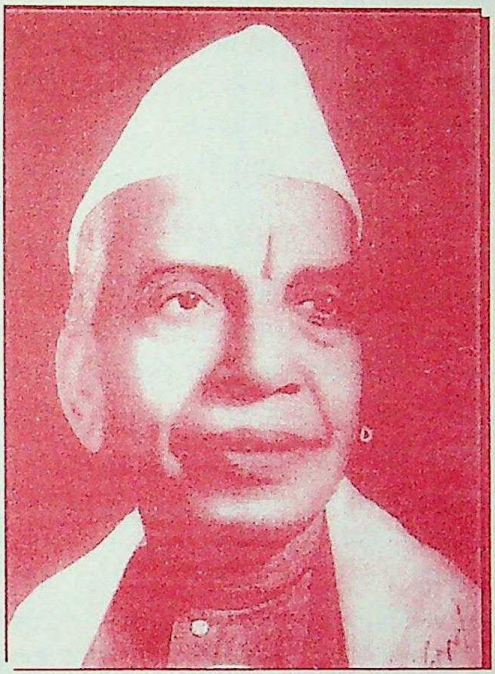

''मैं अतीत नहीं, भविष्यत् हूँ तुम्हारा,
सत्य मुझमें देख लो निज स्वप्न सारा ''

❋ प्रकाशक ❋

श्री गहोई वैश्य समाज (रजि.)

डबरा, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

गहोई वैश्य समाज (रजि.), डबरा

कार्यकारिणी 2000-01

			☎
1.	श्री जमुनादास मोदी	अध्यक्ष	22418 (O) 22902 (R)
2.	श्री रमेशचन्द्र पहारिया	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	22385
3.	श्री मनीराम कसाव	कनिष्ठ उपाध्यक्ष	24178
4.	श्री बद्रीप्रसाद नगरिया	मंत्री	23477
5.	श्री लखनलाल नोगरैया	कोषाध्यक्ष	53497
6.	श्री राजेन्द्र विजपुरिया	उपमंत्री	23477
7.	श्री दिनेश नैना	संगठन मंत्री	25034
8.	श्री अजीत नीखरा	अंकेक्षक	24839
9.	श्री रमेश चऊदा	सांस्कृतिक मंत्री	53880
10.	श्री जवाहरलाल कुचिया	बर्तन संयोजक	22978
11.	श्री भगवानदास सिजरिया	धर्मशाला संयोजक	53625
12.	श्री रामसेवक सावला	सदस्य	22913
13.	श्री कालीचरण मोदी	सदस्य	23326
14.	श्री अशोककुमार गंधी	सदस्य	23435
15.	श्री राजीव लोचन सेठ	सदस्य	24336
16.	श्री प्रमोद मोदी	सदस्य	24105
17.	श्री रामबाबू बडैरिया	सदस्य	23404
18.	श्री श्रीराम छिरौलिया	सदस्य	22751 P.P.
19.	श्री महेश नौगरैया	सदस्य	24026
20.	श्री अरविन्द पहारिया	सदस्य	24456
21.	श्री सुरेश छिरौलिया	सदस्य	24738
22.	श्री विनोद घुरा	सदस्य	23126
23.	श्री मुंशीलाल कुरेले	म. सदस्य	25214
24.	श्री केशव नीखरा	म. सदस्य	23501, 24055
25.	श्री हरीबाबू सेठ	म. सदस्य	22267
26.	श्री घनश्याम सरावगी	म. सदस्य	24010

गुप्तजी की जीवन झाँकी

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी के व्यक्ति एवं कृतित्व पर पद्यमय अनुकृति

प्रकाशन समिति

- श्री जमुनादास मोदी
- श्री बद्रीप्रसाद नगरिया
- श्री कैलाश नारायण सांवला
- श्री रमेश चन्द्र पहारिया
- श्री केशव नीखरा
- श्री राजीवलोचन सेठ
- श्री दिनेश कुमार नैना
- श्री विनोद घुरा

• रचयिता •

अनन्तराम गुप्त कुचिया

• सम्पादक •

रामजीशरण छिरौल्या

अखिल भारतीय गहोई वैश्य महासभा

37वाँ अधिवेशन कानपुर (उ.प्र.)

25 दिसम्बर 2000

✻ प्रकाशक ✻

श्री गहोई वैश्य समाज (रजि.)

डबरा, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

सर्वाधिकार रचयिता के अधीन

सम्पादकीय

कवि श्री अनन्तराम गुप्त जी ने अपने अध्यापकीय जीवन में सरस्वती की आराधना मन से की है। उनकी आत्मा के हर स्वर ने एक जगह बनायी। निश्चित रूप से ईश्वर के प्रति उनकी आस्था ने उन्हें कवि बना दिया। बुन्देली ग्रामीण जीवन की शैली को अपनाते हुये बुन्देली भाषा को काव्य में सहज कर दिया। उनकी काव्य रचनायें जहाँ एक ओर खोज पूर्ण सत्य को उजागर करती हैं, वहीं दूसरी ओर जीवन के सत्य को उद्घाटित करती हैं। प्रारम्भ में कवि ने काव्यानुवाद कर भारतीय प्राचीन संस्कृति को जीवंत किया। वहीं अपनी रचनाओं से एक नया शोध प्रस्तुत किया, यह उनका साहित्यानुराग ही है।

श्री अनन्तराम गुप्त जी को गहोई वैश्य समाज डबरा ने मैथिलीशरण गुप्त जयंती 2000 पर 'साकेत' साहित्यिक सम्मान से अलंकृति किया, जो उनकी काव्य रचनाओं का ही प्रतिफल है।

कवि अनन्तराम गुप्त जी की यह कृति ''गुप्तजी की जीवन एवं साहित्यिक झाँकी'' है, जो साहित्य के लिये एवं समाज के लिये एक आयाम है। मैं गहोई वैश्य समाज डबरा को एवं विशेष रूप से वर्तमान कार्यकारिणी को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने श्री अनन्तराम गुप्त जी की इस कृति को प्रकाशित करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया एवं मुझे इसके सम्पादन का कार्यभार सौंपा। इस अनुकरणीय प्रयास के लिये सभी को पुनः साधुवाद, धन्यवाद।

आशा है कि साहित्यकार एवं स्वजातीय बन्धुओं के लिये यह कार्य रूचिकर एवं प्रेरणादायी होगा।

- रामजीशरण छिरौल्या

छिरौल्या कुटीर,
कृष्णपुरा, डबरा (ग्वालियर)
मध्य प्रदेश ☎ 24924

प्रकाशकीय निवेदन

हमारे जातीय पुरुष भारत वर्ष में गहोई समाज की ही नहीं समस्त वैश्य जाति का गौरव बढ़ाने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हमारी पहचान हैं। डबरा नगर में गहोई वैश्य समाज गत 20 वर्षों से राष्ट्रकवि की जयंती पर विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आयोजन कर गुप्तजी के विचारों का प्रचार-प्रसार करता आ रहा है। हर वर्ष गुप्त जयंती सप्ताह, कवि सम्मेलन, काव्य गोष्ठी, साहित्य गोष्ठी एवं निबंध तथा कविता गान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है। इस अवसर पर हर वर्ष एक स्थानीय कवि को सम्मानित करने की परम्परा चली आ रही है।

यह सुखद संयोग ही है कि इस वर्ष कवि श्री अनन्तराम गुप्त (कुचिया) को सम्मानित करने का निर्णय समाज द्वारा लिया गया है। अपने सामाजिक सम्मान से प्रभावित होकर श्री कुचिया जी के मन में समाज के प्रति प्रतिउपकार की भावना जाग्रत हुई। इसी प्रेरणा के आधार पर आपने राष्ट्रकवि गुप्त जी की जीवन झांकी पुस्तक की रचना की। जिसमें गुप्त जी के जीवन एवं साहित्य का पद्य में परिचय उन्होंने प्रस्तुत किया व समाज की कार्यकारिणी के समक्ष इसके प्रकाशन हेतु निवेदन किया। कार्यकारिणी ने इसे अपना पुनीत कर्त्तव्य मान कर सर्वसम्मति से समाज के व्यय पर छपाकर सर्वप्रथम गहोई वैश्य समाज के कानपुर में आयोजित 31वें अधिवेशन में समाज के बंधुओं तक पहुँचाने का निर्णय लिया। जो एक अनुकरणीय पहल है। साहित्य एवं प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के कार्य में अन्य पंचायतें तथा सामाजिक संगठन भी इस ओर प्रयास कर सकते हैं। आशा है कि हमारा यह प्रयास समाज में चेतना जाग्रत करेगा।

जमुना दास मोदी
अध्यक्ष
गहोई वैश्य समाज, डबरा

संदेश

प्रिय नगरिया जी,

डबरा भवभूति की नगरी है, जहाँ से यदि कोई भी व्यक्ति अपना जीवन प्रारम्भ करता है तथा अपने कार्य क्षेत्र का सही उपयोग करे, तो वह उपलब्धियों के शिखर पर पहुंच जाता है। उन्हीं में एक विभूति कवि अनन्तराम गुप्त हैं। जो ग्रामीण क्षेत्र में जन्म लेकर ग्रामीण भाषा को जीवंत करते रहे।

कवि ने प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की गाथाओं का पद्यानुवाद किया। वहीं अपनी काव्य रचना से नई प्रेरणा भी दी है। उनकी कृति ''मैथिलीशरण गुप्त की जीवन झाँकी'' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

- द्वारका प्रसाद बड़ैरिया 'चैतन्य'
संस्थापक
अ.भा. गहोई वैश्य विकास संस्थान, मथुरा

संदेश

प्रिय मोदी जी,

यह जानकर हर्ष हुआ कि गहोई वैश्य समाज डबरा स्थानीय कवि श्री अनन्तराम जी 'कुचिया' द्वारा रचित गुप्त जी की ''जीवन झाँकी'' प्रकाशित कर रहा है। डबरा समाज इससे पूर्व श्री कैलाशनारायण सांवला एवं श्री रामजीशरण छिरौल्या के अध्यक्षीय कार्यकाल में निर्देशिका एवं स्मारिका प्रकाशित करके अखिल भारतीय स्तर पर अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुका है आपका यह प्रयास इसी परम्परा की तीसरी कड़ी के रूप में अनुकरणीय होगा।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के जीवन व कृतित्व पर पद्यमय प्रस्तुति अपने आप में एक अनूठी रचना होगी जो स्वजातीय बन्धुओं को गुप्त जी के अधिक निकट पहुँचाने में सक्षम होगी। इन्हीं भावनाओं के साथ मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

- शिवनारायण सुहाने
अध्यक्ष
अ. भा. गहोई वैश्य महासभा

संदेश

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने मानव जीवन की झांकी को मानवता के रूप में चित्रित किया, जो नर से नारायण की गाथा ही है। कुल से युग का जो आदर्श है, वह सर्वव्यापी है। संत तुलसी ने मानस की रचना कर जो संदेश दिया है, उसी को नये ढंग से कवि गुप्त ने आधुनिक जीवन के ढांचे में ढाला है। आजादी के अग्रदूत महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन का उन पर बेहद असर रहा। वैश्य से ब्राह्मण बनने की निपुणता उनको उनके गुरू महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा मिली है।

भक्त कवि श्री अनन्तराम गुप्त ने, जो काव्यांजली गुप्त जी के काव्य पर लिखी है, वह वास्तव में गुप्त जी के साहित्य के मूल्यांकन के मोती है। अनन्तराम जी ने अपने जीवन भर अपनी आत्मा के निकले स्वर को ईश्वर का आशीर्वाद माना है, वास्तव में यह सत्य है। उनकी यह काव्य रचना जहाँ एक ओर गुप्तजी के काव्य पर प्रकाश डालती वही उनके जीवन का सत्य भी उद्घाटित करती है।

हिन्दी साहित्य की यह काव्यांजली अमूल्य रत्न है।

डॉ. रामकृष्ण गुप्त
प्राध्यापक
जे.सी. मिल कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बिरला नगर, ग्वालियर
शोध निदेशक एवं सम्पादक शोधयात्रा

संदेश

श्री अनन्तराम गुप्त साहित्य पथ के पथिक हैं। लोक्भाषा और लोक जीवन की गन्ध लेकर चलने वाले एक अनथक यात्री हैं। कृष्ण भक्ति का पाथेय लेकर जीवन पथ पर चलने वाले एक सहज सरल यात्री हैं। समर्पण नारी का स्वभाव है पुरुष का नहीं पुरुष का अहंकार उसे समर्पण से रोकता है; पुरुष का अहंकार जब विगलित होता है तब वह भक्ति का अधिकारी बनता है। श्री अनन्तराम गुप्त का हृदय एक भक्त का हृदय है।

श्री अनन्तराम गुप्त ने राष्ट्रकवि गुप्त जी की साहित्य साधना को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त एक आस्थावान वैष्णव कवि हैं; गुप्त जी मूलतः गृहस्थ जीवन के कवि हैं। इसलिये वह अपने युग के लोकप्रिय कवि हैं। श्री अनन्तराम गुप्त ने राष्ट्रकवि गुप्त जी की साहित्यिक यात्रा से हमें परिचित कराने का प्रयास किया है। इनकी भाषा सीधी सहज और सरल है। उसमें लोक भाषा बुन्देली का भी पुट है। कवि ने अपने वर्णन में अभिधा शब्द शक्ति का ही प्रयोग किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं राष्ट्रकवि गुप्तजी का यह पद्यात्मक परिचय हिन्दी पाठकों के लिये काफी उपयोगी सिद्ध होगा। कृतिकार और उसकी कृतियों का यह संक्षिप्त परिचय राष्ट्रकवि गुप्त जी के प्रति एक प्रकार का श्रद्धा निवेदन है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि डबरा का गहोई समाज इस कृति का प्रकाशन कर रहा है। डबरा का गहोई समाज सन् 1981 से ही प्रतिवर्ष राष्ट्रकवि गुप्तजी की जयन्ती मनाता आ रहा है। इस अवसर पर वह प्रति वर्ष एक स्थानीय साहित्यकार को सम्मानित भी करता है।

इस कृति के प्रकाशन में सहयोग देकर डबरा का गहोई समाज साधुवाद का अधिकारी हो गया है।

रमाशंकर राय
अध्यक्ष
मुक्त मनीषा, डबरा

।। श्री हितं वन्दे जगत गुरुम् ।।

राष्ट्र कवि श्री मैथलीशरन गुप्त हिन्दी काव्य जगत के एक ऐसे जाज्वल्य मान नक्षत्र है जो आज भी अपनी आलोक मयी प्रखर राशियों से सम्पूर्ण हिन्दी जगत को आलोकित कर रहे हैं। कवी मनीषी परिं भू स्वयं भू के अनुसार कवि का कभी विनाश नहीं होता, वह अपनी कविता के माध्यम से सर्वदा जीवित बना रहता है।

आदरणीय गुप्त जी परतन्त्र भारत में जन्में और स्वतंत्र भारत में अपना काव्य जगत का सम्पूर्ण वैभव लुटाकर अमर लोक को पधारे।

उनकी कुल 52 रचनाओं में भगवान के बावन अवतार का वैशिष्टय समाविष्ट है जो तीन पग में अखिल ब्रह्माण्ड को नाप लेता है। ठीक यही गुण आदरणीय दद्दाजी की कविता में विद्यमान है। उन्होंने अपने कवि कर्म के माध्यम से सम्पूर्ण काव्य जगत को न केवल प्रभावित किया है वरन् प्रत्येक जन मानस पर अपना वर्चस्व भी स्थापित किया है।

उनकी वह काव्य यात्रा उनके बहु आयामी व्यक्तित्व को उजागर करती हुई राष्ट्र के उच्च शिखर पर पहुँच जाती है, जहाँ से वे सम्पूर्ण राष्ट्र भी उनको भाव भयी दृष्टि से टकटकी लगाकर आज भी निहारता रहता है।

''राम तुम्हारा वृत्य स्वयं ही काव्य है'' की भावना से जिस कवि ने अपनी कविता को आयाम दिया हो उस कवि के वृत्य को यदि कविता का वर्म धारण करा दिया जाये तो इससे बड़ी श्रद्धांजलि उस राष्ट्र कवि के प्रति भला और क्या हो सकती है ?

भक्त हृदय कवि श्री अनन्त राम गुप्त ने राष्ट्र कवि गुप्त जी के प्रति जो उनके जीवन वृत्य मयी काव्यांजलि समर्पित की है। वह अपने आप में एक सर्वथा अनूठी एवं निराली श्रद्धांजलि है इस काव्यांजलि में उनके व्यक्तित्व कृतित्व की अपूर्ण झांकी कराई गई है। इससे हिन्दी साहित्य जगत निश्चित रूप से लाभान्वित होगा ऐसी पूर्ण आशा है इति शुभम्।

दिनांक 14.10.2000

डॉ. प्रेम नारायण श्रीवास्तव डी.लिट्.
अध्यक्ष हिन्दी शोध विभाग,
आई. ओ. पी. रिसर्च सेन्टर, वृन्दावन (उ.प्र.)

भूमिका

भक्ति भक्त भगवंत गुरू, चतुर नाम वपु एक।
इनके पद वंदन किये, नासत विघ्न अनेक ॥

इस नाभाजी महाराज की उक्ति अनुसार गुण गान करते हुए मैं कवि के रूप में ख्यात होने लगा। सेवा निवृत्त शिक्षक के रूप में डबरा निवासी बन गया एवं वहाँ की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति मुक्त मनीषा का आजीवन सदस्य बन कर रमण करने लगा। परमहंस मस्त राम गौरीशंकर समिति से जुड़ने पर श्री रामगोपाल भावुक जी के उपन्यास रत्नावली का भावानुवाद करने का अवसर हाथ लगा। जिसका प्रकाशन मानस संगम शिवाला कानपुर ने किया है। श्री गहोई वैश्य समाज डबरा द्वारा श्री गुप्त जी की जयन्ती 2000 पर मेरा स्वागत सम्मान किया गया। तब से मेरे मन में प्रश्न उठता रहा कि मैं समाज कें लिये क्या लिखूं ? क्या उपकार दूं ? तो आभाषित हुआ कि श्री गुप्त की जीवन झांकी लिख, बस इसी संकल्प से प्रेरित होकर उनकी जीवन झांकी पदों में निर्मित हो गई जो आपके सबके समक्ष प्रस्तुत है।

दोहे -

जाति, धर्म-गुण, कवि - समझ,
श्रद्धांजलि के रूप।
कही प्रशंसा आपकी,
निज मति के अनुरूप ॥
हो समाज हित मन समझ,
कीना कुछ गुन गान।
कवि के अक्षर चार में,
संपूरन कृति मान ॥

- अनन्त राम गुप्त 'कुचिया'

पद - 1

बदों अब चिरग्राम मही,
झांसी मण्डल के अन्तर्गत, भारत उत्तरदेश रही ।
संवत पन्द्रह सौ के लगभग, राव साव ने टेक गही ।
नगर ओड़छे से यह आये, गाँव बसायो बात सही ।
पुरखा, रामचरन बुलवाये, तिनकी सम्मति राय लही ।
धन धरती दे कर सम्मानित, बखरी हू यह बात कही ।

पद - 2

रामचरन जी सेठ कहावत जोई,
उन्निस सौ चार प्रगट भये, विक्रम संवत भावत ।
सातों सुख जिनके गृहमाही, साज बाज बतलावत ।
कारोबार रहीसन जैसो, नौकर चाकर छाजत ।
राम भक्त हूं पूरे जानो, गायक गुन गन गावत ।
कुंज एक गृह में निरमाई, तहाँ साधना साधत ।
रहस रमायण रचना जिनकी, दंपति रूप उपासत ।
कनक लता की छाप संग रख, दोइ ग्रन्थ निर्मावत ।
कहं तक करूं बड़ाई इनकी, चारों फ़ल भये पावत ।

पद - 3

रामचरन की धन पुण्यायी ।
पतनी मिली सुशील सु सौम्या, नाम सुकाशी बाई ।
पांच पुत्र रत्न जिन प्रगटे, छठई कन्या आई ।
दो रहे बड़े दोइ रहे छोटे, मैथली बीच कहाई ।
श्रावण शुक्ल तीज, अठारह, छयासी सन बतलाई ।
राष्ट्रकवी बन पाये ये ही, जग में धूम मचाई ।

पद - 4

शरन मैथली आज बधाई ।
सावन शुक्ल तीज को प्रगटे, झूला झूल झुलाई ।।
थिरचर हरषित खुशी मनावत, मेघन झड़ी लगाई ।
हरियारौ सावन जग शोभित, दादुर घुनि हू छाई ।।
पपिहा पीउपीउ कर बोले, मोरन शोर मचाई ।
शीतल मंद पवन झक झोरन, आनंद बरसत माई ।।

पद - 5

गुप्तजी रहे मिडिल ही पास।
सुख सुविधा सब कुछ होने पर, लगा न मन कवि आस॥
बाल सखा अजमेरी जी संग, कविता करन लगे अनियास।
सुनकर पिता मोद मन माने, दे असीस उल्लास॥
वैश्योपकारक छपे पत्रिका, बनन लगा इतिहास।
पढ़ सुन चर्चित भये भारत में, रंग में भंग प्रकाश॥

पद - 6

बाल सखा मुंशी अजमेरी,
रहे विसम्भर भीकाजी सुत, यहं पर आन बसेरी।
अघहन शुक्ल दोज को जन्मे, संवत अड़तीस ऐरी।
वर्ष सत्रह उमर रही जब, मात पिता गवनेरी।
रामचरन ने पोषन कीनां, यों ये पुत्र भयेरी।
कलाकार, कवि, गायक ये भये, गीतन रूचिर रचेरी।
मोहित करें गुणन अपने से, संगहि संग लसेरी।
मुंशी नहीं मुसलमा नाही प्रेम बिहारि पगेरी।
होनहार बिरवान चीकने, पातन ज्योहिं लसेरी।

पद - 7

दुबेदी श्री महावीर प्रसाद।
राय बरेली ढ़िंग दौलतपुर, प्रगटे भाषा याद।
सरस्वती नाम पत्रिका प्रकासी जिसमें बाद विवाद।
खड़ी बोलि व्याकरण सुसम्मत, मिला सुगुप्त प्रसाद।
माने गुरू काव्य के अपने, छपती शोधन वाद।
मिलते जुलते प्रेम बढ़ गया खड़ीबोलि का अलग स्वाद।
लेखक, कवि, समीक्षक करते सब ही याद।
पाकर बेलिक सहारा जैसे चढ़ जाती प्रसाद।

पद - 8

जो जो कवि दद्दा घर आये।
महादेवि वर्मा कहलातीं, राम कृष्णजी दास कहाये।
पंत सुमित्रा नंदन जी रहे, हरिवंश राय बच्चनजी पाये।
बाल कृष्ण शर्मा नवीन जी वात्सायन अज्ञेय बताये।
मोतिचंद्र, नगेन्द्र, जेनेन्द्र हु, सवन गुप्त को कंठ लगाये।

पद - 9

दद्दा घर जे नेता आये
राष्ट्र पिता महात्मा गांधी, जवाहरलाल हू भाये।
राष्ट्रपती राजेन्द्र प्रसाद जी, श्री गणेश शंकर जी छाये।
अब्दुल गफ्फार, संपूर्णानन्द हु, गुप्त बंधु इन सब मन भाये।

पद - 10

रहिं पतनी श्री सरजू बाई।
नौ संतान भई पर जीवित, उनमें एकहि पाई।
नाम उरमिला शरन रहो जिन, तिनकी संतति गाई।
झांसी कोठी के अधिकारी, पैतृक संपत्ति भाई।

पद - 11

साले बहिनोई का हास।
रहे गुप्तजी के बहिनोई, नगर कालपी खास।
तेऊ कविता करके जाने, बहु तक ग्रन्थ प्रकाश।
करें हास दोऊ मिल बैठे, कहि बहिनोई आस।
मेरा कोइ उपनाम बताओ, दिया रसि केन्द्र सु भाष।
प्रथम नाम मैंने रक्खा था, दिया दान अनियास।
सोइ द्वारकादास कहाये, नायिका भेद सुवास।

पद - 12

गुप्त जी ''मधुप'' नाम उपधारौ।
जेजे अनुवाद किये आपने, तिन कृतियन में डारो।
हेतु यही जान परौ मोही, सार ग्रहन गुन वारो।
रसिक नाम दान निज करके, मधुप नाम निरधारो।
विद्वत जन मन गुनो आपने, क्या है फर्क विचारौ।

पद - 13

गुप्तजी बहुत पदवियाँ पाईं।
सन उन्निस सौ सेंतिस के मद्य स्वर्ण जयंतियां गई मनाई।
हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कृत, सन् पैंतालिस माई।
मिला मंगला पुरस्कार भी, जहं तहं भई बधाई।
उन्निस सौ छियालिस में काशी, हीरक जयंती भाई।
दस हजार से किया पुरस्कृत, फूलन झड़ी लगाई।
साहित्य सम्मेलन प्रयाग से विद्या वाचस्पति पाई।
डी.लिट दई विश्वविद्यालय जो आगरा भाई।
सन चउअन पद्म भूषण भयै यों झण्डा फहराई।

पद - 14

उन्निस सौ इकतालिस के सन्, दद्दा जेल गये।
भारत भारति चिढ़ अंग्रेजन, गिरफ्तार कर लये॥
कुणाल गीत की रचना कीनी, सोई छोड़ दये।
यों स्वतंत्रता सेनानी बन, जीवन पलट भये॥

पद - 15

राज्य सभा सदस्य रहें दद्दा।
कृपा पात्र श्री राष्ट्र पती के, रहे विराजे गद्दा॥
लोक हितैषी बातें गुन के, करते दस्तखत जत्था।
बारह वर्ष रहे संसद में, दई राष्ट्र को रस्ता॥

पद - 16

पुस्तक प्रेस दोइ संबंधित।
दद्दा लिख लिख ढ़ेर लगायें, तब सब ही के मन संकल्पित॥
क्यों न प्रेस घर मांह लगावें, करें ताहि को स्वयं संचालित।
नाम करण 'साहित्य-सदन' कर, करने लगे पुस्तकें मुद्रित॥

।। साहित्य - सृजन ।।

रंग में भंग पद - 1

गुप्त जी 'रंग-भंग' रच डाली।
प्रथम कृती कहलाई इनकी, उन्निस सौ नो वाली ।।
चित्तौड़ और बूंदी के राजा, आनवान गुण शाली ।
मर्यादा अरू शूर वीरता, दोनों ने है पाली ।।
काल वली का कहा तमाशा, मातृ भूमि रंग ढ़ाली ।

जयद्रथ वध पद - 2

करी 'जय द्रथ बध' की रचना ।
सन् उन्निस सौ दस के माही-
काव्य गुरू हित भई अर्पना ।।
सात सर्ग की कथा पुरानी-
ज्यादा रहि अन्याय कल्पना ।
जयद्रथ भागी बना जाहि को-
कौरव रचित व्यूह भर्त्सना ।।
अभिमन्यु वध सुनकर अर्जुन-
जयद्रथ वध की करी गर्जना ।
मरने लगा विनय तव कीनी-
कृष्ण कृपा की भई वर्षना ।।
मारा तभी, स्तुती कीनी-
धन्य धन्य प्रभु तेरी सृजना ।

भारत-भारती पद-3

भारत की जब रची भारती।
सन उन्निस सौ बारह कहते, जन-जन उतारी आरती।।
देस, काल, अरू कर्म, धर्म सब, भूत भविष्य उच्चारती।
पढ़ पढ़ सुन सुन जनता चेती, आन्दोलन मच वावती।।
शब्द वाण की तरह वीघते, हृदय जोश उपजावती ।

शकुन्तला पद - 4

रहि 'शकुन्तला' भारत- जननी।
सन् उन्निस सौ चौदह राची, सो दुष्यन्त की पतनी ॥
विश्वामित्र मेनका पुत्री, कण्व रिषी की पलनी ।
हुआ गान्धर्व विवाह आश्रम, हुई भूल निज करनी ॥
मिली सोइ निज पति से जाकर, दद्दा सोई बरनी ।

किसान पद - 5

'किसान काव्य' लिख दिया गुप्त ने।
उन्निस सौ सत्रह की रचना, करी प्रेणा एक मित्र ने ॥
प्रथम प्रार्थना बाल विवाह पुन, दुखान्त युक्त बेगार ने।
देश त्याग, फिजी प्रत्यावर्तन, अन्त शीर्षक सार ने ॥
बड़ी प्रेरणा दायी सब को, जीवन कृषक संभार ने ।

पंचवटी पद - 6

''पंचवटी'' मध भरी चतुराई।
उन्निस सौ पच्चिस की रचना, खंड काव्य कहलाई ॥
सौ अट्ठाइस छंद कहे चुन, सूर्प-नरवा संवाद बनाई।
धीर वीर नायक लक्ष्मण तहं, वातन नहीं भुलाई ॥
रमणी के दो रूप दिखाये, रोष, तोष उपजाई ।
देवर भाभी हास्य अनोखा, सोई मधुर मिठाई ॥
मर्यादित श्रंगार कहौ रस, तामे नाक कटाई ।
बना लोक प्रिय भाषा भाव से, सब जन करें बडाई ॥

वैतालिक पद - 7

रचना ''वैतालिक'' की नीकी।
सन् उन्निस सौ छब्बिस माही, प्रकृति छटा बहु भांति खिली की।
सब में सब कहिं उसकी छाया, धर्म सनातन बात गली की ॥
करना कर्म न बैठे रहना, बात विचारों आत्म वली की ।
जग विराट काया है प्रभु की, विश्व बन्धु यह बात भली की ॥

शक्ति पद - 8

''शक्ति'' नाम पुस्तक रच डाली।
सन् उन्निस सौ सत्ताइस रचना, संघे शक्ती वाली ॥
दुर्गा सप्तशती आराधित, जिसकी कथा निराली।
देव दनुज संग्राम नित्य ही, हो ते आये आली ॥
शक्ती जिसका साथ दे गयी, बना सु वैभव शाली।

सैरन्ध्री पद - 9

गुप्त जी ''सैरेन्ध्री' रच डारी।
सन उन्निस सौ सत्ताइस मध, छप्पय छंद मझारी।
महा भारत के कीचक बध की, नारी की हुश्यारी ॥
कामी कीचक युक्ति जुक्ति से, भीम दियो संहारी।
शिक्षा देती लंपट कीचक, अरू सतवंती नारी ॥

वन वैभव पद - 10

''वन वैभव'' रचना रच डाली।
सन उन्निस सौ सत्ताइस के मध, नई ढाल में ढ़ाली ॥
यद्यपि अंश महाभारत का, फिर भी कथा निराली।
भ्रात भाव को पुष्ट किया जिन, न्याय नीति कोपाली ॥
पूर्वार्ध उत्तरार्ध बखाने, दो दो हिस्सों वाली।

बक संहार पद - 11

लिखा गुप्त जी, 'बक संहार'।
उन्निस सौ सत्ताइस सन में, कीना पर उपकार।
महाभारती कथा पुरानी, जिसका पुनरूद्धार ॥
धर्म सनातन परिवारिक कृत, वर्णा लेकर सार।
नई नई युक्ति तर्कना सुंयत, समझे सब परिवार ॥
होय धर्म क्या, क्या परिभाषा, चकृत सब संसार।
गृह गृह नित्य पढ़े यदि सब तो, होगा धर्म प्रसार ॥

हिन्दू पद - 12

''हिन्दू'' नाम रचना रच डारी।
उन्निस सौ सत्ताइस प्रकाशित, भूतकाल छवि प्यारी ॥
वर्तमान की कही विषमता, निराकरण गति भारी।
मंगल की पुन करी कामना, हिन्दुत की रखवारी ॥

विकट भट पद - 13

संरचना रहि एक ''विकट भट''।
उन्निस सौ अट्ठाइस प्रकाशी, छत्री मर्यादा संघट ॥
देवी सिंह अरू सवाइ सिंह मिस, आन वान वार्ता रट।
वनी वीरता पोषक सुन्दर, मानो चित्र खिचे पट ॥

गुरूकुल पद - 14

रची गुप्त जी ''गुरूकुल'' वानी।
उन्निस सौ अट्ठाइस सन में, सिक्खन वीर कहानी।
एकादस गुरूओं का वर्णन, पंच ककार सुहानी ॥
धर्म कर्म में बड़े निपुण ये, जग में एक निशानी।
आन वान पर मर मिट जाते, हिन्दुन मे लासानी ॥

साकेत पद - 15

धन्य धन्य ''साकेत'' तुम्हारा।
उन्निस सौ इकतिस सन रचना, कवियन का अति प्यारा ॥
द्वादस सर्गन करी प्रस्तुती, वर्तमान गुण सारा।
मानव वादी प्रभू बनाये, लेकर राम सहारा ॥
सब सद्गुण मानव के अन्दर, दिखते किये विचारा।
विरह उर्मिला का दिख लाया, नारी जाति निहारा ॥
राम चरित के बाद समीक्षक, दूजी श्रेणी धारा।

यशोधरा पद - 16

''यशोधरा'' करूणा की पुतरी।
उन्निस सौ बत्तिस रच डारी, गीतन गीत भरी ॥
बुद्ध त्याग, संसिद्ध बने जग, सब ही जग निदरी।
परिवारी जन करो कल्पना, मोह अरू छोह भरी ॥
यही ज्ञान गरिमा को पाकर, जीवन गति सुधरी।
होता, होता आया, होगा, अंतस चेत धरी ॥

द्वापर पद - 17

''द्वापर'' की रचना रच दीन्ही।
उन्निस सौ छत्तिस सन माही, तीन खंड में भीन्ही ॥
मुख्य मुख्य पात्र सब बरने, कृष्ण भक्ति जे लीन्ही।
कथा पुरातन नूतन भावन, भक्ति भावना कीन्ही ॥
पड़ता यही जान है मुझको, हरी गान मति भीन्ही।
लक्ष एक हम सब अरू कवि का, राष्ट्र सुरक्षा चीन्ही ॥

सिद्धराज पद - 18

''सिद्धराज'' में सिद्धि कहानी।
उन्निस सौ छत्तिस की रचना, राजन नीति बखानी ॥
देश भक्ति राष्ट्रीय भावना, जन जाग्रति हित आनी।
जिससे होय सिद्ध कारज सब, बने स्वतंत्रता दानी ॥
पांच सर्ग में वर्णन कीन्हा, सब ही जन ने मानी।

नहुष पद - 19

अजमेरी की याद ''नहुष'' पुस्तक लिख डाली।
उन्निस सौ चालीस, कथा रहि वही पुरानी वाली ॥
मनुज बना है इन्द्र, हुई बुद्धी मतवाली।
गिरा मही तल आय, शची की चाल निराली ॥

कुणाल गीत पद - 20

''कुणाल गीत'' दद्दा लिख डाले।
उन्निस सौ चालिस के सन् - पड़े जेल के पाले।
नृप अशोक का सुत कुणाल जो - झेले संकट काले॥
कुटिल विमाता चली चाल जो - अंधे करवा डाले।
वधू सहित विपदा को काटी - जिसके भाव निराले॥
अन्त मिलन पिता अपने से - छाती से मिल पाले।
हुई कृपा जोति हू आई - मिटे कष्ट के छाले॥
नब्बे पांच गीत निमाये - जेल के फंदा टाले।

विश्व वेदना पद - 21

''विश्व वेदना'' हू रच डारी।
यद्यपि लिखी युद्ध से प्रेरित, जनता देख दुखारी॥
सन उन्निस सौ व्यालिस के मध, पूरण करी प्रसारी।
देश, काल की उपज स्वार्थों, विज्ञान क्षेत्र पर डारी॥
सब सद्गुण को लुप्त बतायें, मिल युग अत्याचारी।
अंत साधना शांति बखानी, कर्म भक्ति निरधारी॥

अर्जन विसर्जन पद - 22

अर्जन और विसर्जन की कृति, श्री गुप्त लिख डाली।
उन्निस सौ व्यालीस ईस्वी, सदी सप्त- अठ वाली॥
दोनों की ही कथा विदेशी, समझ न आती आली।
शायद स्वतंत्रता प्रेमी बनकर, जन हित में रच डाली॥

कावा और कर्बला पद - 23

गुप्त जी ने मुसलिमता दरसाई।
'कावा और कर्बला' लिखकर, उनकी संस्कृति गाई॥
उन्निस सौ व्यालिस की रचना, बत्तीस रूप अपनाई।
हजरत मुहम्मद रहा कथानक, नाती पुत्र लड़ाई।।
राष्ट्र धर्म की जुड़ी एकता, संग कवि की चतुराई।

अजित पद - 24

''अजित'' नाम पुस्तक लिख डाली।
कारागृह के काल वीति जो, सो मुख से कह डाली।
साथी संगी मिले अनेकों, घटना घटी प्रणाली ।।
अजित नाम साथी पर रिझे, जिस की घुटन निराली।
पन्द्रह प्रसंग लिखे पुस्तक में, जे करतूतें काली ।।
सन उन्निस सौ छवालिस रचना, सब की देखी भाली।

अंजलि और अर्घ पद - 25

अंजलि और अर्घ रच डाली।
उन्निस सौ पचास सन के मध बापू श्रद्धांजलि वाली ।।
राष्ट्र पिता का शोक मनाया, गुण की गाथ निराली।
हुआ नही जो कर दिखलाया, काटी फलती डाली ।।
हुई विपरीत बुद्धि मारक की, काल बड़ा बलशाली।

प्रदक्षिणा पद - 26

''प्रदक्षिणा'' पुस्तक रच डारी।
माता काशी बाई समर्पण तिनकी भक्ति प्रसारी ।।
सन पचास में भई प्रकाशित, राम कथा विस्तारी।
रामजन्म दिन जिन तन त्यागा, परिक्रमा कर डारी।
श्री तुलसी कृत उनको प्यारी, सो निज शब्द उचारी।
पौरूष मानव का बतलाया, मिटे झंझटे सारी ।।

पृथ्वी पुत्र पद - 27

''पृथ्वी पुत्र'' रची कवि राज।
करी समर्पित श्रोताओं को, जिन मोती सा काज ।।
उन्निस सौ पचास उत्पत्ति, त्रय प्रसंग सो साज।
दिवोदास मानवता वादी, कालमार्क समय का राज ।।
प्रथी पुत्र विज्ञान कहानी, विश्व बन्धु त्रय छाज।

हिडम्बा पद - 28

''हिडम्बा'' श्री गुप्त रच डाली।
उन्निस सौ पचास सन के मध, महाभारत की डाली।
मिलते भीम अचानक वन में, बातें हो गईं खाली ॥
कुन्ती माता दीनी स्वीकृति, ज्ञान सारिका पाली।
जिसका सार समझ में आया, विचार एकता आली ॥

जय भारत पद - 29

गुप्त जी ''जय भारत'', रच डाला।
उन्निस सौ बावन के सन मध, महाभारत का दृश्य निराला ॥
सैंतालिस प्रकरण है बरने, स्वर्गा रोहण विचित्र संभाला।
युद्ध भावना अति दुख दाई, निज मौलिकता रंग विशाला ॥

विष्णु-प्रिया पद - 30

''विष्णु प्रिया'' गुप्त जी बरनी।
उन्निस सौ सत्ताउन प्रकाशित, श्री चैतन्य महा प्रभु पतनी ॥
विन संतान बाल वय त्यागी, उदासीनता जीवन कथनी।
अति कठोर नारी का जीवन, बीते सोई विपदा सहनी ॥

राजा प्रजा पद - 31

''राजा प्रजा'' गुप्त जी भाखी।
सन उन्निस सौ छप्पन कहियत, बाद स्वतंत्रता राखी ॥
क्या दे गये राजा रैयत को, सत्य सत्य सोई साखी।
प्रजातंत्र पा प्रजा किया क्या, सो सब गुन के चाखी ॥
क्या हो रहा और क्या होगा, जिसका कवि अभिलाषी।

रत्नावलि पद - 32

गुप्त जी ''रत्नावलि'' रच डारी।
सन उन्निस सौ साठ प्रकाशित तुलसी पत्नी प्यारी ॥
जरा ग्रस्त दशा निज वरनी, कर कंपित जब भारी।
करो समर्पण पंत सुमित्रा, छन्छ चौहत्तर धारी ॥
रत्नावलि वियोग का वर्णन, मानस की तैयारी।
पत्नी का कर्त्तव्य दिखाया, ज्यों परछाई सारी ॥
चरचा सब ही विरह पोषनी, फिर भी हरषण कारी।
धन्य धन्य महिलन की महिमा, तुम सम को उपकारी ॥

पत्रावली पद - 33

गुप्त की ''पत्रावली'' विचार।
इतिहास बताता आज जिन्हे है, उनके मन उद्गार ॥
सात पत्र के भाव संकलित, निज सस्कृति का सार।
महाराणा की आन बान पर प्रथी राज बलिहार ॥
जजिया औरंगजेब लगाया, दिया शिवा फटकार।
औरंगजेब सुत को खत लिक्खा, अपनी मृत्यु विचार ॥
जसवन्त सिंह हार पर रानी, कीने बन्द किवार।
अहिल्या मंत्रि राधोवा था जो, जिसने खाई हार ॥
राजसिंह व्याह की बातें, रुक्मिनि की उन्हार।

उच्छवास पद - 34

''उच्छवास'' दुख दर्द कहानी।
जो कछु बीती लिखी गुप्त जी, निज पारिवारिक हानी ॥
जन्म मरण संसारिक जीवन, जैसे बहता पानी।
करते भोग आय सब प्रानी, दुख नहिं पाते ज्ञानी ॥

झंकार पद - 35

गुप्त की इक पुस्तक ''झंकार''।
फुटकर रचनायें जो करते, सब का संग्रह सार ॥
त्रेसठ शीर्षक चुनकर राखे, मानो मणियन हार।
पढ़ सुन मन गुन सभी चतुर जन, हो जाते बलिहार ॥

॥ गुप्तजी के नाटक ॥

लीला नाट्य गीत पद - 36

''लीला'' नाट्य गीत लिख डाली।
सन उन्निस सौ उन्निस मध जो, सरस्वति छपवा डाली॥
बहुत काल खोई हुई रहकर, फिर से इसको पाली।
बाल काण्ड कथनिक किसका, जो विवाह तक आली॥
पुन साकेत अयोध्या पकडा, ये ही भजन प्रणाली।

चन्द्रहास गीत पद - 37

''चन्द्रहास'' नाटक लिख डाला।
रहा कथानक जो पौराणिक, पांच सर्ग में पाला॥
जब प्रकृती अनुकूल जु बनती, मिटती गड़बड़ झाला।
कवित, सवैया विविध छंद कृत, रस दरसाने वाला।

तिलोत्तमा पद - 38

''तिलोत्तमा'' नाटक रच डाला।
पांच अंक है जिसके बरने, सुन्द उप सुन्द हवाला॥
पौराणिक सब रहा कथानक, इन्द्रि विजय पथ वाला।
तिलोत्तमा ने डाल मोहनी, आपस मरवा डाला॥
बड़ो बड़ो के घर इन घाले, ऐसा जादू जाला।

अनध पद - 39

''अनध'' नाम नाटक रच डाला।
बुद्ध चरित्र प्रेरणा दायी, नाटक शैलि निराला॥
सत्रह दृश्य दिखाये जिसमें, देश प्रेम उजियाला।
तन मन धन उत्तम जन सेवा, भुवन सेव्य मत वाला॥

॥ संस्कृत - अनुवादित ॥

बासव दत्ता पद - 40

गुप्त जी किया हिन्दी अनुवाद।
रहा नाम जो ''बासव दत्ता'' संस्कृत की मरयाद ॥
छठी शताब्दी भाष की रचना, माना सवन प्रसाद ।
रस वियोग करूणा परि पूरित, करते सब ही याद ॥
षट अंकों में दृश्य अनुपम, सबको देता स्वाद ।

प्रतिमा पद - 41

''प्रतिमा'' का अनुवाद किया
यद्यपि भाष रचित नाटक यह, संस्कृत का रस पिला दिया ॥
सात अंक दरसाने वाला, बनो वास का कथन लिया ।
सन उन्निस सौ इकसठ रचना, जिसका है संकेत दिया ॥

अविमारक पद - 42

''अविमारक'' अनुवाद किया।
रहा भाष जी महाकवी कृत, संस्कृत का आस्वाद दिया ॥
षट अंकों की रचना इसकी, पात्र विशेष का नाम लिया।
रस श्रंगार ज्ञान का अर्जन, पड़ा रहा बहु समय लिया ॥

अभिषेक पद - 43

रूपान्तर ''अभिषेक'' किया।
भाष महाकवि रचित रहा जो, हिन्दी भाषा स्वाद दिया ॥
वाली वध से शुरू हुआ जो, अभिषेक राम सम्पन्न किया।
षष्ठ अंक में हुआ प्रकाशित, जन जन से सम्मान लिया ॥

॥ काव्य अनुवाद ॥

वीरांगना पद - 44

'वीरांगना' काव्य अनुवाद।
किया मैथली शरन गुप्त जी, बंगला भाषा मान प्रसाद ॥
एकादश सर्ग रच डाले, मधुसूदन माइक्रे ल सुनाद ।
पत्र रूप में शिक्षा बरनी, जो कर बैठी नारी जात ॥
रूक्मिनि, तारा, सूर्प-नरवा पुन, वेतली, भानुमती कुटिलात।
द्रोपती, दुःशाला और उरवसी, जना, जहानवी महिला आद॥
कही कहानी शकुन्तला की, जो रहि नृपति भरत की मात ।
जो कुछ हुई सो होकर रह गई, अब तो चेतो अवला जात ॥

विरहणी व्रजांगना पद - 45

विरहणी ब्रजांगना की याद।
मधुसूदन कृत बंगला भाषा, कीना हिन्दी में अनुवाद ॥
महा विरह रस उनका बरना, प्रेम रूप का कृपा प्रसाद ।
कृष्ण स्मरण भाव गोपिका, चलता रहे संवाद अनाद ॥

मेघनाद वध पद - 46

गुप्त जी हिन्दी अनुवाद किया।
'मेघनाद वध' माइकेल कृत, बंगला का रस पिला दिया॥
अतुकान्त छन्द में रचकर जिसको, नौ सर्गों में बांट दिया।
विद्वत जन सब करे प्रशंसा, लक्ष्मण यश विस्तार दिया॥

वृत्र संहार पद - 47

''वृत्र संहार'' अनुवाद किया
लेखक हेमचन्द्र बंगाली, ताही का अनुसरण किया
चौविस सर्ग बने अति नीके, अतुकान्त में बद्ध किया
उन्निस सौ बावन हि प्रकाशा, विद्वानन सम्मान किया

उमर खैयाम पद - 48

''उमर खैयाम' किया अनुवाद।
मित्रों ने अनुरोध किया जब, पाही लिया बुद्धि आस्वाद ॥
पचहत्तर ही रहि रूवाइयां, मिला हिन्दी को कृपा प्रसाद।
बहुत पुराने उर्दू शायर, अंग्रेजों ने भी कीन्हा याद ॥
हीरा कनि ज्यों उज्जवल होती, विखरे जहं तहं प्रभा अनाद।

प्लासी युद्ध पद - 49

''प्लासी युद्ध'' अनुवाद किया।
कविवर नवीन चन्द्र सेन कृत, बंगाली को याद किया ॥
पांच सर्ग में वर्णन जिसका, विद्वानन स्वीकार किया।
भूतकाल को जो बतलाता, उसका भी गुण गान किया ॥

दिवोदास पद - 50

''दिवोदास'' रचना रच डाली।
संपूर्णानंद कृति गणेश से, प्रेरित हुई निराली ॥
ब्रह्म दिवोदास संवादी, मानवता मत वाली।
रहो न दैव भरो से ही तुम, किये प्रयत्न खुश हाली ॥
मानवता ही सब की जननी, सोह राम ने पाली

भूमि भाग एवं मंगल घट पद - 51

नाम सुने पर मिली नहीं।
भूमि भाग, मंगल घट पुस्तक, खूब तलासी दिखी नहीं।
नाती पोतों को पत्र लिखा, पर जवाब भी मिला नहीं।
होंगी कहीं अबस ही उनकी, दिया नाम जो गलत नहीं।

॥ गुप्तजी की विलक्षणता ॥

(पद - 1)

जे जे ज्ञान ध्यान की बातें।
आगे से कवियन लिख राखी, अपने अपने नातें ॥
सत युग में है वेद रचे गये, ब्राह्मण बन गये तातें ।
त्रेता में रामायण रचना, बाल्मीकि कहं जातें ॥
द्वापर में महाभारत गायो, कौरव पांडव घातें ।
कलि में तुलसी दास गुसाई, आजादी दद्दा के खातें ॥

(पद - 2)

अधिक कथानक कथे पुराने।
काव्य कला कौशल से तेऊ, बने नवीन सुहाने ॥
वर्तमान में ढाल उन्हें पुन, समायानुकूल बखाने ।
अब भी मानव सीखे उनसे, भाव विचार सयाने ॥
देस काल पात्र गुन चुन के, निज कविता में आने ।

(पद - 3)

दद्दा की साहित्य ऊंचाई।
संस्कृति भारत वर्णन कीनी, देस, विदेस पठाई ॥
देस प्रेम फहराइ ध्वजा को, राष्ट्रीय कह लाई ।
राम भक्ति की गंग बहाई, स्वाभिमान दरसाई ॥
काव्य कला जेती ते आकर, समा गई कविताई ।

(पद - 4)

नारी जाग्रति दद्दा दैन।
विरह चित्र उरमिला अनूपम, साकेत वर्णन बैन ॥
यशोधरा बुद्ध की पत्नी, काटी विपदा सैन ।
विष्णु प्रिया तो रही पुत्र बिन, सह संकट दिन रैन ॥
पंचवटी नारी का चित्रण, रहा हास्य प्रदऐन ।

(पद - 5)

गुप्तजी रहे आन्दोलन कवि।
देस काल की निरख परिस्थिति, प्रगट भये जैसे रवि ॥
रामायण लिखि राम काल में, त्यो महाभारत फवि ।
युग चेतना वर्णन कीन्ही, जासो दद्दा की छवि ॥

(पद - 6)

सबहि धर्म दद्दा मन भाये।
राम, कृष्ण, बौद्ध, सिक्ख गुरू, मुसलिम ईसा गाये ॥
राष्ट्र धर्म सर्वोपर राखौ, सबके प्रान बचाये ।
मानव धर्म जगत संचालक, जन जन के मन भाये ॥
प्रभु से मिलना है यदि तुझको, विश्व बन्धु अपनाये ।

(पद - 7)

शैली विविध गुप्तन दरसाई।
प्रबंध आत्मक पहली कहियत, खंड काव्य मन भाई ॥
गीत काव्य की द्वितीय कहावै, तीजी लीला गाई ।
चौथी आत्मोद्गार कहावे, पंचम नाट्य कहाई ।
छठवीं कहि अनुवाद मध्य में, अतुकान्त अपनाई ।

(पद - 8)

दद्दा को हम भक्त कहेंगे।
भक्ती काव्य रचे है जितने, उनके गीत पढ़ेंगे ॥
देखो तुम ''झंकार'' उठाकर, प्रेम विभोर करेंगे ।
कही साधना की सब बातें, हिय उद्गार दिखेंगे ।
सब ही में ईश्वर दरसाया, विश्व रूप निरखेंगे ॥

(पद - 9)

राष्ट्र कवि राष्ट्रीय कवि अन्तर।
सब ही देश बासि जिहि माने, किया प्रयत्न हो जीवन जीकर
वर्ग भेद की भाव भावना, तज दीनी हो दृष्टी सम कर
भारत उन्नति की सब बातें, मानव श्रष्टि बताइ उच्चतर
ईश्वर भक्ति निवाही पल पल, इससे और नहीं कोइ बढ़कर

(पद - 10)

अमर न जग में कोइ रहा।
जो आया निज कार्य किया पुन, आगे मार्ग गहा ॥
यों ही चलता, चलता आया, सोई पंथ रहा ।
बारह दिसम्बर सन चौसठ को, तन का अंत कहा ॥
राष्ट्रीय सम्मान पूर्वक, संस्कार निर्वहा ।

(पद - 11)

जाति कुल के तुम गहोई, इतना भी अब ना कर सके।
एक कृति उनकी मंगाकर, घर आपने में रख सके ॥
बनते हो भक्त भगवान के, पर भजन नहि तुम कर सके।
धिक्कार जीवन को तुम्हारे, एक कृति ना पढ़ सके ॥

॥ दोहा ॥ (पद - 12)

ज्यो झंडा के तीन रंग, अशोक चक्र के साथ ।
त्यों गुप्त की वाणियाँ, राम भक्ति की गाथ ॥ 1
नेम टेम कुछ भी नहीं, जब फुरसत मिल जाय ।
पढ़ों प्रेम से बुद्धि बल, देगी ज्योति जगाय ॥ 2
दद्दा जी शत शत नमन्, किया देश उद्धार ।
मान बढ़ाया राष्ट्र का, किया जाति उपकार ॥ 3

॥ कविता ॥

दद्दा ऐसी रचना रच गये, नाम अमर जग कर गये ॥
'भारत भारती' से चेताये, जन मानस में बस गये ।
'पंचवटी' में करी तपस्या, महिलन को चेता गये ॥
'यशोधरा' में खूब रूलायो, नारी महिमा कह गये ।
राम राज्य की शिक्षा पाई, सोइ साकेत जता गये ॥
सावन तीज प्रगट भये सोई, झूला झूल झुला गये ।
राष्ट्र कवी की पदवी पाई, झंडा को फहरा गये ॥

॥ कविताएँ ॥

दद्दा की दाद सवै करे, याद
धन्य धन्य बड़ी बखरी बारे,
बाँटो खूब प्रसाद।
झांसी बाँटो दतिया बाँटो,
उरई कालपी याद॥
बटत बटत दिल्ली नो पहुँचो,
कैसो नो नो स्वाद।
कनक लता पै रीझ सिया जू,
भेजी सरवी अनाद॥
जाके गुण गुण कहत न आवे,
शरन मैथिली नाद।
अनन्त राम गुप्ता जस बरने
करे भारती याद॥

(2)

राष्ट्र के थे गौरव श्री मैथिली शरन।
जाति के थे सौरभ, श्री मैथिली शरन।
राष्ट्र कवि बनकर, देशहित किया।
देस ने जो चाहा, वह उसको दिया।
कविता तुम्हारी मनो आभरन।
भारत की भारती ने जादू किया।
अंग्रेजी सत्ता को जड़ से हिला दिया।
एकता लडी बनी, हुआ जागरन।
पंचवटी लिखकर, नारी सचेत की।
नारी समस्या पर, चुटकी भी ली।
यशोधरा में उसका, कराया रूदन।
रत्ना वियोगनी की, गाथा कही।
साकेत की उर्मिला, चर्चित हुई।
के कई की नीति का किया भर्त सन।

॥ इति शुभम् ॥

गहोई-गोत्रावली

1. वासर गोत्र

कहें रूसिया, कठिल, वेहरे, पहारिया, मर रेजा ।
मोर, ददरया और मरेले, सेठ, सेठिया, खैरा ॥
कसाव, दमेले, कारे खेमऊ, नाहर, अरू सादेले ।
वांगर झांझर कहें पटैरहा, सरावगी मुनगेले ॥
धूसर, साह, कंजार-राछरे, पटौदिया पुरंपुरिया ।
वरया खरया अरू कुन यार हैं इकतीसक गिनधरिया ॥
वासर गोत्र के कहे आंकने, सो तुम इनको जानो ।
व्याह काज संबंध आदि में, इनके नाम प्रमानो ॥

2. गोल गोत्र

कहें इटौरिया, कंथरिया पुन, कुरौठिया और कटारे ।
खरया, गंधी, पुन छिरोलया, जालौनयाहु निहारे ॥
ढिंगोरया, तरसौलिया, दोहरया, निगोतिया और विलैया ।
विजपुरिया, भगौरिया, वरदिया, मुनगेले और सिजरिया ॥
मिहौनया, रावत, अरू सरावगी, सोनी, सेठ, बड़ैरिया ।
अंधी, हड़यल, मौनया जानो, आगे और अमेरिया ॥
गोल गोत्र के कहे आंकने, गिनकर के अट्ठाइस ।
याद दास्त कर रखना भाई, हो वे पूर्ण खुवाइस ॥

3. गाँगिल गोत्र

नोल्येहा नौगरैया निसंगे, साहु वरौठा हीके ।
चपरा गेड़ा और डेंगरे, झुडेले वरेले नीके ॥
मीही के तुम कुंवर सो जानो, रावत कहे बनोली के ।
कहे आंकने ग्यारा गांगिल, सो सब जानो नीके ॥

4. बाँदल गोत्र

कह गुगोरिया, कुरैठया, खरया, डाडस चौदा जानो ।
जगोसिया, सेठ और पहारिया, वरहा पटैरहा मानो ॥
लखटकिया, सोनी, सावला, सुलगनया पहिचानो ।
रहै दगोरहा और पहारू, हतनोरिया कह गानो ॥
कहें आंकने वांदल गोत्र के, सत्रह नाम वखाने ।
याद किये ते काम आयेंगे, नहि पीछे पछताने ॥

5. जैतल गोत्र

कहे बड़ैरिया अरू लहारिया, नगरिया कठल जो है ।
सिकौलहा और रिखोलया जानों, सेठ बरेठ विमोहैं ॥
सात आकेन, ही तुम जानो, गौत्र सु जैतल ही मैं ।
सब से कम संख्या है इनकी, कहे आंकेन जी मैं ॥

6. वाछिल गोत्र

कनकने, कुचिया, हूंका, सोनी, वरसंइयां पुन गंधी ।
तपा, इटौरया अरु महतेले, पुन बड़ौनया, संधी ।।
हैं रिसौनिया और सकेरे, टिकरया दमेले रावत ।
पीतपुरा के कहें धनौरया, नौ गांव के सेठन भाखत ।।
वेरखेरा के रहे विनौरहा, वढ़िया कह बतलाये ।
कहे उनई सक वाछिल गोत्र हिं, सो सबको जतलाये ।।

7. कोछल गोत्र

इन्दुरख्या, कश्तवार, इकसड़े, कंजौल्या, कुरेले ।
नाछोला अरू पिपरसेनियां, विसवारी पंडित बोले ।।
कहे मिसुरया और नीखरा, निगोतिया हू तौले ।
खरया, सावला और ददरया, पुन बड़ौनयां बोले ।।
रहे पहारिया और विनोरया, रावत फेर वखाने ।
सोनी सेठ और सुलगनया, या विधि वाइस सुहाने ।।
कहे आंकने कोछल गोतहि, सो सब इनको जानो ।
व्याह काज करवे के लाने, इनको कंठ वखानो ।।

8. काछिल गोत्र

कहें अमौलया और कटारे, चपरा और झुड़ेले ।
पिपर सेनियां भौंदिया रावत धूसर सेठ तुसेले ।।
दसहि आंकने काछिल गोतहि, सो सब तुम्हें बताये ।
काम परे पर ध्यान कर लियौ, तुक बंदी कर गाये ।।

9. भाल गोत्र

डेंगरे, जुरेले, खर्द, कुदरया, सेठ चंदाया जी के ।
पंच नोने अरु तीतविरासी, घुरा सुहाने नीके ।।
निहाना खांगट वजरंगढ़िया, शाह मिहौना मानो ।
भाल गोत्र के कहे आंकने, इन सबको पहिचानो ।।

10. कोहिल गोत्र

झूके और कंदेले, लोहिया, साव उनाव बखाने ।
चार आंकने आंके कोहिल, गोतहि तुम्हें बताने ।।

11. कासिव गोत्र

आस कहें अरू आसू दीपा, पुन दीपा अरु वेड़र ।
पांचय हैं खन्ताल जु कासिव, गोत्र आंकने भूंपर ।।

12. सिंगल गोत्र

गोत्र वारवां सिंघल जानो और नाम वादरायण ।
जिसके अन्दर पटिया आते, कहें इन्हें पारायण ।।
रही किंवदन्ती समाज में, बारह गोत्र वहात्तर आंकन ।
किन्तु लेखा जोखा मिलता, सौ अरू तेतिस शाखन ।।
कछू दोहरे कछू न पाये, तिन संख्या चौंतीसन ।
इतिहास गहोई वंश तुम देखो, तब पाहौ इनको गिन ।।

भारत में पाया सम्मान

एक-एक पंक्ति में जिसकी भारत की ममता निहारती।
भारत को उद्बोधित करने राष्ट्रकवि ने लिखी भारती॥

राष्ट्रकवि ने बन वैभव में धर्मराज से सूत्र कहाया।
जिसको भूल सदा भारत ने अपना-अपना रक्त बहाया॥

आपस की है आँच जहाँ तक रह सकते वह सौ पर पाँच।
किन्तु अन्य के लिये सदा ही हम सब रहें एक सौ पाँच॥

जगती तल को भारत का आदर्श बनाने जो आए हैं।
नर को नारायण बनने का मार्ग दिखाने जो आए हैं॥

देशभक्ति के बीज देश में उपजाने को जो आए हैं।
रचकर के साकेत ग्रन्थ को मार्ग सभी वह दिखलाए हैं॥

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी जी का है यह नगर महान।
उन्हें भी दद्दाजी ने था दिया सदा पूरा सम्मान॥

दैनिक पत्र प्रताप सदा ही देता था दद्दा को स्थान।
उनने भी दद्दा के संग में शासन से लड़ने की ठान॥

अंग्रेजी शासन दोनों को देता रहा सदा नुकसान।
वैमनस्य की आग बुझाने दिया उन्होंने निज बलिदान॥

दोनों देशभक्त मित्रों ने आपस में कर ली पहचान।
इसीलिए दोनों मनीषियों ने भारत में पाया सम्मान॥

रचियता - **सियाराम सर्राफ**, डबरा

प्रगति पथ के पथिकों से !

प्रगति पथ के पथिक तुम ! धैर्य-साहस से बढ़ो ।
हो गहोई, श्रेष्ठ तुम ! निज व्यक्तित्व सुन्दर अब गढ़ो ॥
रूढ़ियाँ छोड़ों पुरानी, जो प्रगति बाधा बनी हैं ।
जनहित करें- सेवा समर्पित, सेवक वही सच्चे धनी हैं ॥

सेवक बनो- सच्चे, अरे ! पद-लोभ, यश को छोड़ दो ।
प्रगति पथ के कंटकों को, कुचल दो अरु तोड़ दो ॥
आलोचना से मत डरो, वे तो सदा होती रहीं हैं ।
नव-चेतना की क्रांति लखकर, वे सदा रोती रही हैं ॥

पद-मान-यश-लिप्सा-है सदा बाधक तुम्हारी ।
मिथ्या प्रदर्शन, व्यसन त्यागो, जड़ता मिटाओ आज सारी ॥
विस्मृत किया आदर्श वह सब, पूर्वजों ने जो कहा ।
ईर्ष्या-परस्पर और निंदा- तब कार्य इतना ही रहा ॥

'बंधु' के सम्पादक पुराने, हैं सभी हमने भुलाए ।
श्रेष्ठ कवि-लेखक पुराने, अब किसे हैं याद आए ॥
'बंधु' को जीवित रखा, निस्वार्थ होकर श्रम किया ।
घर-घर गए वे 'बंधु' लेकर, संदेश सेवा का दिया ॥

तरसौलिया मुक्ता, श्यामसुन्दर इटौरिहा हमने भुलाए ।
गोविन्द, मेधाकाम, धूसर, रतन, मोती अब किसे हैं याद आए ?
सम्राट, रसिकेन्द्र, श्याम कवि- अब कहाँ वे गीत गाते ?
और भूले बेधड़क को - पोल जो सब की सुनाते ॥

प्रगति के वे ही विरोधी, जो स्वार्थपरता में सने ।
त्याग खुद का कुछ नहीं है, किन्तु अधिकारी बने ॥
अधिवेशनों में छद्मवेषी, खूब बढ़कर बोलते हैं ।
मिथ्या प्रदर्शन कार्य इनका, जहर ही बस घोलते हैं ॥

बंधुओं ! अब तो जगो ! बहुत ही सोते रहे हो ।
आत्म गौरव प्राप्त कर लो, जो सदा खोते रहे हो ॥
मिलकर चलो, हो संगठित, सहयोग आपस में करो ।
छल-कपट-पाखण्ड छोड़ो, कष्ट औरों के हरो ॥

- डॉ. जमुनाप्रसाद बड़ेरिया
सुभाषगंज, भवभूति नगर (डबरा)

कवि परिचय

- नाम : अनन्त राम गुप्त ''कुचिया''
- पिता का नाम : श्री सट्टूराम कुचिया
- जन्म तिथि : 5.8.1934
- जन्म स्थान : ग्राम बडैरा, जिला दतिया (म. प्र.)
- कार्य : सरकारी- शिक्षक अब सेवा निवृत
- शिक्षा : हिन्दी मिडिल
- स्थाई पता : बल्ला का डेरा, झांसी रोड, डबरा ग्वालियर (म. प्र.) 475110
- कृतियाँ : प्रकाशित -8, अप्रकाशित अनेक
- परिवारिकता : पुत्र उमाचरन, श्यामाचरन (बडैरा वाले) श्याम किराना स्टोर बल्ला का डेरा, डबरा, ग्वालियर पिन - 475110

बुन्देलखण्ड की माटी के ग्राम बड़ैरा जिला दतिया (म.प्र.) में जन्में श्री अनन्तराम जी गुप्त बुन्देली भाषा के रचनाकार हैं। आपने 'हितायन', 'ओरक्षायश', 'पद्मावती', 'वृन्दावन' एवं 'वणिक चालीसा', 'गोत्रावली', 'दान दोहावली', गुप्तजी की फागें' एवं 'रत्नावली' का पद्यानुवाद कर हिन्दी जगत में अपना स्थान बनाया है। आपकी साहित्य साधना आपकी पूजा है। आपने सृजन से भवभूति नगर (डबरा) को सुवासित किया है। आप मुक्त मनीषा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति के आजीवन सदस्य एवं नगर की साहित्यिक गतिविधियों के सूत्रधार हैं। पंचमहल की भाषा के प्रथम रचनाकार संत कवि कन्हरदास के पदों को खोजकर कन्हर पदमाल एवं आस्था के दोहे का सम्पादन किया है। 'हितायन', 'ओरक्षायश' एवं 'रत्नावली' आपकी चर्चित कृतियाँ हैं।

- सम्पादक

प्रिन्टोविजन, ग्वा. ☎ 422240